







कविता

## गांधीजी की शॉल

■ हरिश्चंद्र परसाई

राजिंदर सिंह को गांधी जी का पता नहीं लगा। सेवकजी ने उन्हें स्टेशन पर पहुँचाया, किन्तु मैं साथ बैठे एक परिचित व्यक्ति को पूछा, पर पता नहीं लगा। परिचित मैं रिपोर्टर और अखबार में विद्यार्थी छानने पर सोचा, पर लागू कि गांधीजी की ही हुई परिचय शॉल थी, उसे पहिना और अखबारों मालालों में फँसाने से उनकी पहिनाता नष्ट होना, संकोचों चाँवियों का गूच्छ था सूखेका तो था नहीं। पूर्य गांधीजी को साक्षात् था।



सेवकजी हर दिन को तरह दवाके उन कर्तव्य लाभकर बैठे थे। शून्य में देख रहे थे। सड़क पर किन्तु भी परिचित निकल गए। सेवकजी ने किसी को नहीं बुलाया। और दिन होता, तो वे परिचित को देखते ही वहीं से बैठे-बैठे जयहिंद उठाकर चले आगे बढ़ते।

वही नौचो मुकाम तो रहा, उसका हाथ फेकते और धीरे धीरे आगे बढ़ते थे। ऐसे नहीं हो सकता। आप निना चले के नहीं जा सकते। एकचक्र भीतर ले जाते, चाय बूतले अलमारी में एक फाल निकालते, सिस्मने अखबारों काटते लाने की, सिस्मने उनका नाम पढ़ा था। इतने बड़े कतरने की थी, सिस्मने उदक के बचपन में जो नाम पर पिया उनको खोज में किन्तु पता ही नहीं। एक कतरन सब कतरने थे शकते और और-और में अपने-अपने रास, समाज सेवाओं का उल्लेख करते जाते। वे शकते कि किस मनु में किस नाम के समाज सेवा थे। परिचित उनका एक उदाहरण बताते तो सेवकजी अचरभ से उसका हाथ फेककर कहते- 'सम! एक मित्र और मैं! आपको अपने जीवन को सबसे मूल्यवान, सबसे पवित्र बतवाता हूँ।

'अलमारी में से तह की हुई एक हल्के नीले रंग की शॉल निकालते और आरती के थाल की तरह सामने रखकर, भाव विभोर हो कहते- 'यह शॉल मुझे पूर्य गांधीजी ने दी थी। मेरे दिमाग में वे स्वयं आशीर्वाद देने थे। हम दोनों के सिरों पर हाथ रखकर हमसे बोले- 'तू मेरा बेटा नहीं, यह मेरी बेटा है।' 'खिलखिलाकर हंस पड़े बाप और यह शॉल हम दोनों को ओढ़ा दी। आज वे नहीं हैं...' वे आँख बंद कर लेते और भाव तस्बीन हो जाते। परिचित अगर समझदार होता, तो इस स्थिति का लाभ उठाकर बिना जयहिंद किए ही झूटपट निकल भागा। कोई परिचित उन सड़क के बिना उन कतरनों और उन शॉल को देखे, निकल नहीं सकता था। आज चार दिनों से लोहा बंदकत निकल रहे हैं। सेवकजी उन्हें नहीं छोड़ेंगे। मैं सोचते- राजपुर में उनका इतना बड़ा प्रचार, सिस्मने की भी शकती नहीं हूँ।

'चाँद नहीं है तो क्यों को स्या को घोषणा करता हूँ लासउडमीकर लगा

तांगा निकला। सेवकजी का मन में उमंग की लहर उठी। पर कारा के नये जाऊँ शॉल तो को नहीं हूँ। यह सभा में वे गांधीजी को शॉल ओढ़कर जाते। मंच पर अंतिम बक्त को बाद खड़े होकर कहते- 'मुझे भी इस विषय पर तो बतव करना है।' माइक पर वे बोले- 'मैंने जो कुछ सोचा गांधीजी के चरणों में बँदकर, वे मुझे पूर्यत कह कर लेते हैं। मेरे विवाह में वे स्वयं आशीर्वाद देने आए...और पूरा किस्सा... मेरे जीवन को सबसे मूल्यवान, सबसे पवित्र निधि है। सभा में लोग जानते थे कि सेवकजी अखबार आगे और शॉल के बारे में बतकर बैठ जायेंगे। एक सभा में वे इस विषय पर आ ही रहे थे कि सभापति ने घंटी बजा दी। हलबुकर बैठने लगे, सभी किसी मसरर में आवाज लगाए- 'सेवकजी! आप शॉल के बारे में बताना भूल गए।' लोग हंस पड़े। पर सेवकजी ने सहज भाव से कहा- 'जब प्रश्न उठाना ही गया है, तो बताना मेरा धर्म है और फिर पूरा बताना...'

सेवकजी उधर पीठो के थे, विजने जवानों के आरंभ में सोच लिया था कि जीवन-पर देश की स्वतंत्रता के लिए समन करयें। पर स्वतंत्रता पहले आ गई, जीवन शेष था। अब क्या करें? यह तो सोचा ही नहीं था कि स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद क्या करयें? विजने सोच लिया था, वे सरकार बनाने लगे। कुछ विरोधी दल में आ गए। एक ही जात न सके, सरकार में नहीं जा सका। वे वही उलझन में आ गए। हंस-हंस राजा निवृत्तय में जाता है।

सेवकजी अग्रजय में आ गए। पर वहाँ नाम नहीं लगा। वे लौटा आए। पर अब क्या करें? वे पूरे गीरे से सोच रहे थे। शॉल जीवना शक्ति ले गईं। किसलिए पड़े? जिन्हे, तो कर्णों को स्या को ऐसे जीने से मर जाना अथवा। एक

'अलमारी में से तह की हुई एक हल्के नीले रंग की शॉल निकालते और आरती के थाल की तरह सामने रखकर, भाव विभोर हो कहते- 'यह शॉल मुझे पूर्य गांधीजी ने दी थी। मेरे विवाह में वे स्वयं आशीर्वाद देने आए थे। हम दोनों के सिरों पर हाथ रखकर हमसे बोले- 'तू मेरा बेटा नहीं, यह मेरी बेटा है।' 'खिलखिलाकर हंस पड़े बाप और यह शॉल हम दोनों को ओढ़ा दी। आज वे नहीं हैं...' वे आँख बंद कर लेते और भाव तस्बीन हो जाते। परिचित अगर समझदार होता, तो इस स्थिति का लाभ उठाकर बिना जयहिंद किए ही झूटपट निकल भागा।

विचार उठने मन में सहज आया और उदक आगे से वे खड़े हो गए। चपल पानी और दूर सर करीने में कपड़ों की एक टुकड़ा लगे। और और वैसी ही शॉल खूब लगे। मन हो सब समझान पर लिना- वस्तु सूख नहीं है, भावना सत्य है। अब समझा खड़ी हुई कि उसका नयान केरत मित्र? सेवकजी ने उसे पानी में डुबाकर सूखाया, उससे फर्राँ साफ किया, दो-तीन दिन उसे ओढ़कर सोते रहे। अन्धकार से उसको चमक-चमक गायब हो गई। प्रफुल्ला लौट रही थी, पर ज्योंही वे प्रश्न होते, आरका कूट पड़ती कि लोग समझ न जाएँ?



शाम को सभा तय थी। कोई दिन बाद सेवकजी सभा को तैयारी में थे। माइक पर फेकड़ डीली हुई और वे वहाँ

शॉल का रहस्य भांग लिया। अंतिम उदक के बाद खड़े हुए। बोले, 'मुझे इस विषय पर तो बतव करना है।' उन्होंने माइक फेकड़ लिया था। दिवत कब रहा था और हाथ कांप रहे थे। आँख रों को स्थिर करने का प्रयत्न करना पड़ रहा था। बोला नया प्रश्न क्या है? 'मैंने जो कुछ सोचा है, गांधीजी से... वे शॉल उन्होंने मुझे दी थी। बापू...'

पहली पॉसि में बैठे एक आदमी उठकर खड़ा हो गए और बोला, 'क्यों बूट बोलते हैं सेवकजी? यह शॉल तो बिल्कुल नई है और मिल को है। भला गांधीजी मिल को शॉल देते?' सभा में

हंसी हुई, सेवकजी के पर उलमामें। माइक पर फेकड़ डीली हुई और वे वहाँ

## हिंदी गजल परंपरा को समृद्ध करती गजलें

■ समृद्धाय दाय

कई उन्मयणा एवं आलोचना को पुनर्कोट में प्रकाशन के बाद डॉ. ललन प्रसाद सिंह का पहला गजल संग्रह 'गजल-गीत संगम' नाम से किताबों विद्या निकेतन, वाराणसी से सद्यः प्रकाशित हुआ है। इस संग्रह में दो खंड हैं, पहला 'गजल खंड' तथा दूसरा 'गजल खंड'। गजल खंड में कुल 326 गजलें सम्मिलित हैं। ये गजलें उन्होंने 1995 से 2022 के बीच के कालखंड में रची हैं। समग्रकाल को वजह से प्रारंभ को गजलों एवं वीरगाथा को गजलों की भाषा-शिल्प एवं कहान में योग्य-बुद्ध और हैं। गजल को अपनी एक विशिष्ट शैली है, जो कविता से भिन्न है। गजलें मजहब हैं कि ललन प्रसाद सिंह की गजलें कवय, संकेतों, शब्दों एवं तान के माध्यम से एक नया प्रसिद्धि का उदाहरण करती हैं। उनको गजलों सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक विवरणों पर प्रचार करने का सशक्त शक्तिशाली क्रांति का उदाहरण करती हैं।

मेरा आश्रय जल गया, तेरी सिरासल में '

लोकतांत्रिक व्यवस्था में ललन प्रसाद सिंह की पूर्ण अस्था है। वे समाज एवं मानवता के पक्षधर हैं। पर भारतीय लोकतांत्रिक व्यवस्था से पूरी तरह सहमत नहीं हैं। भारतीय लोकतांत्रिक व्यवस्था की शक्तिपूर्ण उन्हें नाकार लगती हैं। वे लिखते हैं- 'स्वतंत्र बतल जाता है, व्यवस्था कहा बदलती चुनाव खत्म हो जाता, सूखी कहां मिलती।' 'वे कहते हैं जनाता मालिक है पर सब मालिक है वे मालिक हैं'

खी-विमरों, एवं आदिवासी-विमरों पर आभारित गजलें भी हैं। ललन प्रसाद सिंह के इस संग्रह में इरक-हुज, दोस्तों, धरमनी, अपना-पराया, खुशी-नाम, ... गुरा, संभ्राय, जाति, लिंग, प्रकृति, युद्ध, कबीर, मार्क्स, कला, संस्कृति, आदि विविध विषयों पर कई गजलें हैं और उन सभी के तेवर अलग-अलग हैं। श्री सिंघ के इस संग्रह में नये गीत भी सामिल हैं। हिंदी साहित्य में गीत सामान्यतः कानू हिंदी गये हैं। हालाँकि गीतों का राजनीयन पर कभी प्रभाव रहा है। वहाँ तक भाषा का सहल है तो इस संग्रह की भाषा उर्द-हिंदी मिश्रित शक्तिशाली है। गजल-

जहाँ तक भाषा का सवाल है तो इस संग्रह की भाषा उर्द-हिंदी मिश्रित 'हिंदुस्तानी' है। गजल-गीतों में शब्दों के नये-तुल्य प्रयोग हैं। तसम शब्दों का प्रयोग नहीं के बराबर है, तद्वय एवं शंशु शब्दों के प्रयोग से भाषा लयात्मक एवं प्रभावोत्पादक बन गई है। कुल मिलाकर हम कह सकते हैं कि ललन प्रसाद सिंह का 'गजल-गीत संगम' एक महत्वपूर्ण संग्रह ही नहीं, अपितु एक अन्दा संग्रह है। उसकी गजलें सपने दिखाती हैं और देशभक्ति की भावना जागृत करने के साथ-साथ कृत्वयस्था के विरुद्ध क्रांति के लिए जोश भी जगाती हैं। उनके गीत पाठक-श्रोताओं को गुनगुनाने पर विवश कर देते हैं।

पर उन्हें उमोद है कि एक न एक दिन यह व्यवस्था बदलेगी। कभी उनका भी वक्त आया, जो हरिशर्ष की ओर फँकल दिए गए हैं। क्रांति लोकांतक की चक्को धीरे-

गीतों में शब्दों के नये-तुल्य प्रयोग हैं। तसम शब्दों का प्रयोग नहीं के बराबर है, तद्वय एवं शंशु शब्दों के प्रयोग से भाषा लयात्मक एवं प्रभावोत्पादक बन गई है। कुल मिलाकर हम कह सकते हैं कि ललन प्रसाद सिंह का 'गजल-गीत संगम' एक महत्वपूर्ण संग्रह ही नहीं, अपितु एक अन्दा संग्रह है। उसकी गजलें सपने दिखाती हैं और देशभक्ति की भावना जागृत करने के साथ-साथ कृत्वयस्था के विरुद्ध क्रांति के लिए जोश भी जगाती हैं। उनके गीत पाठक-श्रोताओं को गुनगुनाने पर विवश कर देते हैं।

पर उन्हें उमोद है कि एक न एक दिन यह व्यवस्था बदलेगी। कभी उनका भी वक्त आया, जो हरिशर्ष की ओर फँकल दिए गए हैं। क्रांति लोकांतक की चक्को धीरे-

गीतों में शब्दों के नये-तुल्य प्रयोग हैं। तसम शब्दों का प्रयोग नहीं के बराबर है, तद्वय एवं शंशु शब्दों के प्रयोग से भाषा लयात्मक एवं प्रभावोत्पादक बन गई है। कुल मिलाकर हम कह सकते हैं कि ललन प्रसाद सिंह का 'गजल-गीत संगम' एक महत्वपूर्ण संग्रह ही नहीं, अपितु एक अन्दा संग्रह है। उसकी गजलें सपने दिखाती हैं और देशभक्ति की भावना जागृत करने के साथ-साथ कृत्वयस्था के विरुद्ध क्रांति के लिए जोश भी जगाती हैं। उनके गीत पाठक-श्रोताओं को गुनगुनाने पर विवश कर देते हैं।

आज सांघ्रायिकाता का जहर सिरायतल में सड कर फैल गया है कि आये दिन राजा-फसाह होते रहते हैं, जातीय-जायिय हिंसा होती है; जिदिगियाँ तबाह हो जाती हैं; बरिनाम-पर जला दिए जाते हैं; सिरायतल अर्धनी-अर्धनी रोजियाँ ससकते हैं; सांघ्रायिकाता से उनकी पीडा को एक पुट्टी मुँध बना करती है।

'अम्मा को पुट्ट मुँध बुडियाँ हमारो उडइ गई दुनियाँ आदानी मर गया, तेरी सिरायतल में

पुस्तक = श्रुगजल-गीत संगम  
गजलकार = डॉ. ललन प्रसाद सिंह  
प्रकाशक = किशोर विद्या निकेतन, भदरनी, वाराणसी - 221001  
मूल्य = 300 रुपये

धारे पुसती है, पर पुसती जरूर है। 'मेहनतकश हम कारखानों के कभी तो वक्त आया, देख लेना नया प्रकाश आसमान में छारा। इस संग्रह में दलित-विमरों,

## गजल



महमूद दरवेश का जन्म 13 मार्च, 1942 को फिलिस्तीन में हुआ था, उनको कविताओं में अरबी भाषा की कविताओं को एक पहचान अलग पहचान दिलाई। उनको ख्यादातर कविताओं का अनुवाद दुनिया को तयाम भाषाओं में हुआ। महमूद दरवेश दुःख, सपनों, उमोदों की महान कवि माने जाते हैं। लाला-लालख फिलिस्तीनीयों की तह महमूद दरवेश का परिवार भी अपनी जन्मभूमि से विस्थापित नहीं, बल्कि निवासित कर दिया गया, क्योंकि माना यह गया कि जहाँ वे पैदा हुए वह जमीन उनको नहीं थी। निष्चयान कर दर महमूद दरवेश की कविताओं में दूट कर दिखता है। लौकिक उनको कविता में केवल भाषा, अर्थ, उच्च, आत्मो, कविता, संवेदन, न आ, उनमें उमोदों की भी थी। उनका दूट विस्थापन था कि अब तक को मानस प्रथम तयाम आवातियाँ को देख चुका है, उन्हें समोदित कर चुका है, ऐसे में हमारे देश पर दूट पड़े आकाशों को भी भविष्य बही होगा, हमारी जमीन हमें मिथिनी, हम अपने पर जरूर लीटेंगे। फिलिस्तीन की मुक्ति और शांति के सपने लिए महमूद दरवेश ने 2008 में 9 अग्रस को दूट दुनिया से विदा ली। मरुकों के लिए एक है, महमूद दरवेश को दो अन्दिन कविताएँ। अनुवाद अलिल जयविकरय ने किया है

### मैं घोषणा करता हूँ

मेरी एक वारिस्थ जमीन भी शेष है एक जैतून का पेड़ है मेरे पास एक नीचू का पेड़ एक कुआँ और एक कैकयस का पीषा जब तक मेरे पास एक भी स्मृति शेष है तुलकासय है ओसा-सा दुलका तो तस्वीर है और एक दीवार

जब तक उन्धरिंत होंगे अरबी शब्द गाए जाते रहेंगे लोकोगीत

पढ़ी जाती रहेंगी — कविता की पीढियाँ अनमार-अल-अन्मे को कथाएँ फूस और रोम के विरुद्ध लड़े गए युद्धों की वीर गायों

जब तक मेरे अँकितार में मेरे लौखें मेरे होत और मेरे हय में खुद हैं जब तक मेरे अपने शत्रु के समक्ष घोषित करुंगा —

स्वयन के लिए प्रथम संघर्ष फिलिस्तीन के नाम पर करिं, मन्तूरुँ, छर्रों और कथियों के नाम पर

मैं घोषित करुंगा — खाने दो कर्नाकित रोटी कारकों को सूख के दुसमनों को मैं जब तक जीवित रहूँगा मेरे कन्ध शेष रहेंगे 'रोटी और हथियार मुक्ति-सोदाओं से लिए'

### फिलिस्तीन के प्रेमी

ओ मेरी प्रिया ! दूट धरो तेरी अँखें वेधती हैं मेरे हृदय को जब भी मैं याद करता हूँ उन्हें

उनमें गरजती है बिजवली दहकता है गुस्सा किंवगि लसकता है उनमें और मैं हमलाल कर रहता हूँ तेरा दूट

आकाश में चमक रहे हैं सख्तों सितारें घायल है मेरा हृदय

## महमूद दरवेश की दो कविताएँ

उस पर भी है खारों धाव तेरा दूर मेरे प्यार का विस्तार है एक पुन है बरताना और भावी दिनों के बीच

भला, कैसे भी समझ सकूँ मैं तेरी अँखों में चमकते वे दिन जब चपन के ये साल जब साय-साय बड़े हुए थे हम

तुम मुझे लगता था, मेरी प्रिया ! कि तेरी उन बड़ी-बड़ी अँखों में जब रही है और मैं मुने लगता था उनके बारे में नए-नए गीत

पर आज निवासित की यह भयानक टण्ड बरसा रही है आग मेरे होत? को जला रही है भद्र? डूटे हय मे, बेरामी के राहों

आज वीरान पड़े हैं वे मकान छोड़ने पड़े थे जो हमें पक्षी तक नहीं बनेते अब उनकी मुसुबों पर

तड़कने लगे हैं आदने आबूदी की मौत के इस जवन पर और हम वीरान पड़े चले लोकोगीतों के टुकड़े अँक रहे हैं कोसत जन्मभूमि को

नए-पुनरे सुरीतों में पर हम गीतों में शब्द-शब्द अपने नीचे और रकते हैं धुनें नई-नई रचना करते अपने

उन वीरान पड़े मकानों पर ओ जान्मु ! हमारा प्यार जीवित है अब भी और भावी सुरीतों है तुमसे आबजु बने समय के साथ-साथ धीमी जरूर हो गई थी पर कमजोर नहीं हुई

ओ गुला वलान ! मैं देख रहा हूँ तुझे कैसे भी तू रहे तुझे रोते हुए गाएँ और मेझों के लख के मोडे तू गुलनू रहती है

विश्वका हूए एक बार के पास से निश्चका प्रवेश-द्वार बदल गया है राख में

मैं देख रहा हूँ तुझे मेरी प्रिया ! ललन में लता हुए सूख रहे एक कुरों के पास

ओ पाकिस्तानी होतलों में बरतन मलने वाली ! मैं देख रहा हूँ तुझे रोते हुए चिथड़-चिथड़ा एक तन्बू में उन अलावों के पास जलदा है जिन्हें अनाथ बच्चों ने और यतार कर रहे हैं जो पर के चूल्हे को आग

मुझे विवास है, मेरी जान ! चाहे कुछ भी क्यों न करना पड़े तुझे कैसे भी क्यों न रहना पड़े चलना पड़े चाहे किसी भी राह पर निवासित की इस आग में, उदासी में बनी रहेगी तू वैसी ही जैसे बरकारर है सूख समुद्र

और हमारी शानदार यह धरती हज़ारों-हज़ार बरस से

मुझे कुसम है, तेरे इस स्माल की तो उठपारित किया था मुझे दिवत करते हुए मैं कसम खाता हूँ, जान्मु ! तेरी कान्ती यनी बरीयनों को मुझे कुसम है तेरे, मेरी जान ! अमर रहेगा फिलिस्तीन हमारा भाग्य फिलिस्तीन

चमकते सूरज के नीचे फिलिस्तीन मेरा है फिलिस्तीन मेरा है फिलिस्तीन मेरा है हमरा ही रहेगा

तेरा नाम — फिलिस्तीन तेरी शक्ति — फिलिस्तीन तेरा नाम-नुशर — फिलिस्तीन फिलिस्तीन — तेरी आशा फिलिस्तीन — महिलीयत गरिमा तेरी

मेरी नाप गीतों से इस शेष मेरी दिखती हूँ हला को सूखी धरती में खोली जाए बीज आने सूख से सँसँी

पूटे-पूटे खेतों की आगम और सररे फिर गुजर खेतों लम्बे लम्बे और उनमें पैदा होगी फसल फनी

ओ मेरी प्रिया ! मेरी किताबों का सार और विचार है तू मेरे गीतों की आग है हर क्षण तुने सम्पूर्ण किया मेरा जीवन तेरे किना होतु ने बरकाय और मेरा मेरे लिए एकमात्र सक्क है तू

फिलिस्तीन बिगपी तू तू मेरी फिलिस्तीन

ओ मेरी प्रिया ! मेरी किताबों का सार और विचार है तू मेरे गीतों की आग है हर क्षण तुने सम्पूर्ण किया मेरा जीवन तेरे किना होतु ने बरकाय और मेरा मेरे लिए एकमात्र सक्क है तू

फिलिस्तीन बिगपी तू तू मेरी फिलिस्तीन













































# क्वारं नवरात्र और अग्रसेन जयंती

# की हार्दिक बधाई

**शाश्वत हॉस्पिटल**

**घुटने का प्रत्यारोपण**  
(Knee Replacement)

आधुनिक तकनीक द्वारा  
सर्वाधिक कम भूल्य में...

**जोड़ एवं हड्डी रोग विशेषज्ञ:**  
एन्डोप्रोथेसिस एवं क्वार्टर का ईन्फ्लू।  
सभी प्रकार के ऑर्थोपेडिक (जगदल सर्जरी) की सुविधा।

• प्रसूति, स्त्री रोग विशेषज्ञ  
• निःसंतान रोग विशेषज्ञ

तलिका चौक, बड़संपारा, रायपुर (छ.ग.)  
फोन : 9302313631, 0771-4009986

**Sintex**

• SINTEX DOORS • WPS DOOR FRAMES  
• WPC DOORS • UPVC WINDOWS

WPC Door Frames

**PESH ENTERPRISES**

Mandi Road, Devendra Nagar Raipur (C.G.)  
rituraj1981@gmail.com • 9827142444, 9926642444  
peshenterprises.com



**भगवान अग्रसेन जयंती की हार्दिक बधाई...**

**Dr. KEDAR AGRAWAL**  
M.S. (Ortho.)  
I.G.O.F. (GERMANY, ENGLAND)  
Bone Specialist & Hand Surgeon

**AGRASEN HOSPITAL**  
ORTHOPAEDIC

Opp. Krishna Talkies, Ramnath Bhimsen Bhawan Road,  
Samta Colony, RAIPUR (C.G.) Ph. 0771-2533535, 2211810  
Mob. 98271-21656, E-mail: dr\_kedar@yahoo.com

**देवी लक्ष्मी हॉस्पिटल एवं मातृत्व फर्टिलिटी सेन्टर**

सर्विकल, प्रसूति, इन्फर्टिलिटी सोल्यूशन्स सेंटर

**सुविधाएं**

अपत्य की निश्चिन्ता एवं सुरक्षित प्रसवोत्पन्न हेतु पूर्ण अतिरिक्त निदेश  
अतिरिक्त हेतु पूर्ण अतिरिक्त निदेश  
-उच्च क्वालिटी के अल्ट्रासोनोग्राम से सुविधाएं  
-पुस्तक, वीडियो एवं ऑनलाइन कंसल्टिंग का ईन्फ्लू  
-3-डी कलर डॉपलर एवं अल्ट्रासोनोग्राम  
-अपत्य के जन्म के बाद एवं रजि. प्रसव एवं निरीक्षण  
-पुस्तक एवं कंसल्टिंग की सेवा इंटरनेट/मोबाइल  
-इन्फर्टिलिटी सोल्यूशन्स की सुविधा उपलब्ध  
-24 घंटे निरीक्षण एवं अत्याधुनिक सुविधा

**निःसंतान दंपति के लिए वरदान**

विश्वस्त विशेषज्ञों की टीम द्वारा मातृत्व फर्टिलिटी में सुविधाएं

• सम्पूर्ण स्त्री चिकित्सा की सेवाएं प्रदान • निरंतरतायुक्त निदान करना प्रयोगशाला  
• सहज प्रसवन तकनीक (A.R.T.) • कृत्रिम गर्भाणु (IUI)  
• आई.सी.एफ. टैटू ट्यूब वेरी (IVF) • सुष्ठु निदानों की विभिन्न सुविधा (TESA, PESA, MESA) • फोसल प्रिवेन्टिव डी.एन.ए. (P.D.T.) प्रिवेन्टिव  
• सुरक्षित गर्भ प्रसव • सोल्यूशन्स एंड इंटरनेट/मोबाइल

बी-19/5, टैंगोर नगर, सिंग रोड नं. 1, रायपुर (छ.ग.)  
फोन: 9434022154, 98271-3421964, 8051763 Email: info@laxmihospitalraipur.com

**महाराजा अग्रसेन**

जयंती एवं नवरात्रि की  
प्रदेश की समस्त जनता को

**हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं**

मि.के.ए. रायपुर  
म. पू.समीलन/अग्रवाल जी



**अग्रवंश के संस्थापक भगवान "श्री अग्रसेन जी" की जयंती महोत्सव पर बधाई....**

**बसंत अग्रवाल**  
सुवा समाजसेवी CMD  
आर्यन बिल्डर्स एण्ड डेवलपर्स प्रा.लि.  
रायपुर (छ.ग.)

**•• महाराजा अग्रसेन जयंती महोत्सव 2023 ••**

**मत्स्य शोभायात्रा**

रविवार, 15 अक्टूबर 2023, सुबह 10:30 बजे  
श्री अग्रसेन भवन, जवाहर नगर से श्री श्याम मंदिर, समता कालोनी

**मार्ग :**  
श्री अग्रसेन भवन जवाहर नगर से समता नगर, राहदा चौक, तेराणा-नी चोक, मेरठनगर, अग्रसेन चौक होते हुए श्री साहू श्यामजी मंदिर के पास से गोवर्धनी चौराहा, समता कालोनी आयेगी।

**अतिथि**

**पूजा-महोत्सव**  
सुबह 9:30 बजे  
स्थल-श्री अग्रसेन भवन, जवाहर नगर, रायपुर

**माननीय संरक्षक श्री गण**  
राय मंत्री जी  
अग्रवाल व्यापार कल्याण मंडल, रायपुर

**माननीय सुदील सराफ जी**  
केदारलाल सराफ महेन्द्रनगर पूरा अग्रवाल समाजसेवी  
संरक्षक-मंडल-श्री अग्रवाल ट्रेडिंग कंपनी

**मुख्य समारोह**

सम्मेलन, पारितोषिक वितरण, अग्रवाल समाज मोहल्ला समितियों का सम्मान एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम

**म्युजिकल नाईट (स्वरित मेहुल जैन, बॉलीवुड मुंबई द्वारा)**  
सायं 6:30 बजे से - श्री अग्रसेन धाम रायपुर  
स्नेह भोज- रात्रि 9:30 बजे से - श्री अग्रसेन धाम रायपुर

आयोजना :-  
समता के सर्व सम्माननीय सदस्यों को व्यक्तिगत रूप से आमंत्रण-व्यय मोहल्ला समितियों द्वारा प्रेषित विज्ञापन में विवर में विवेकी कार्यक्रम कर्तव्य की (संस्कृत/संस्कृत) अग्र-संस्था अग्रसेन से कौशल सह मंत्री से तो वह हमारे सम्माननीय सदस्यों के रूप में उन सभी को क्वार्टर आमंत्रित करते हैं।

**विनीत:- अग्रवाल समाज, रायपुर, अग्रसेन भवन, जवाहर नगर, रायपुर**  
फोन नं. 0771-3505615, 9179189663

• अग्रवाल महिला मंडल • अग्रवाल युवा मंडल • अग्रवाल युवती मंडल

**भगवान अग्रसेन जयंती की हार्दिक शुभकामनाएँ..**

**कृष्णा आयरन स्लीप्स**  
एण्ड ट्यूब्स प्रा. लि.

821, उरला इण्डस्ट्रियल एरिया, सरोरा, रायपुर (छ.ग.)













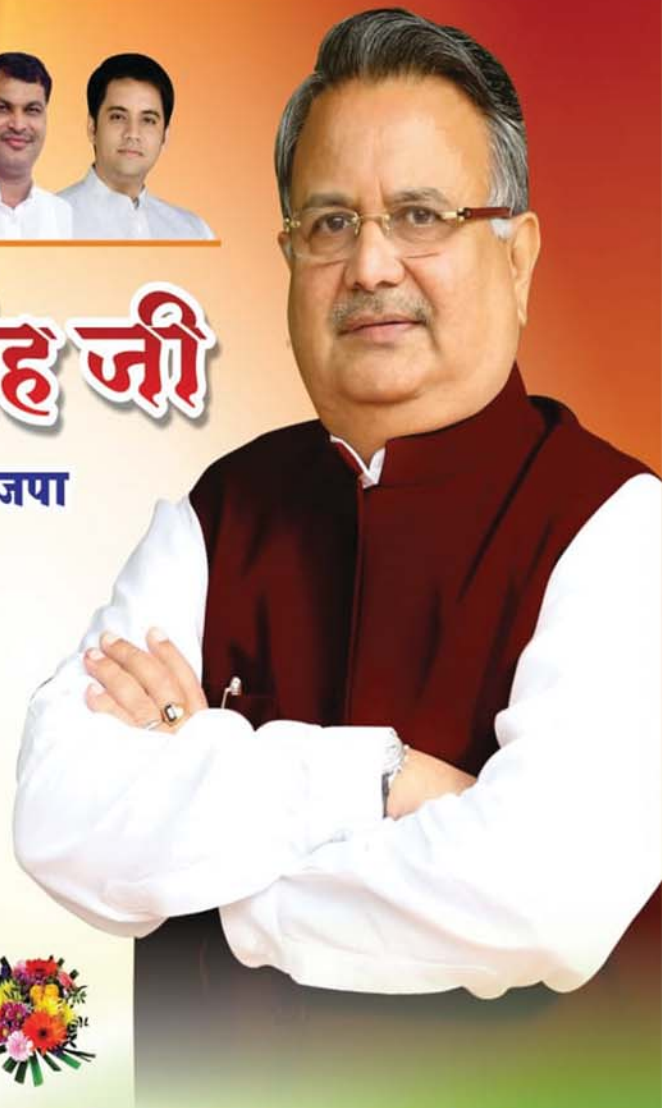












# डॉ. रमन सिंह जी

राष्ट्रीय उपाध्यक्ष भाजपा

एवं विधायक राजनांदगांव

15  
OCTOBER

को  
जन्मदिन

की हार्दिक शुभकामनाएं...



— रघुवीर वाधवा, अरूण शुक्ला, राजनांदगांव —



राष्ट्रीय उपाध्यक्ष भाजपा  
एवं लोकप्रिय विधायक राजनांदगांव

15  
OCTOBER

जीवेत  
शरदः  
शतम्



माननीय  
**रमन सिंह जी**

आपको **जन्मदिन**  
कि हार्दिक शुभकामनाएँ...



आपका अपना **भावेश बैद**













